H.W
21.04.21

Date
Page

प्र-1 हंस और कछुआ पाठ के माध्यम से आप को क्या शिक्षा मिलती है?

उ- हमें "हंस और कछुआ" पाठ के माध्यम से यह शिक्षा मिलती है की - मुसीबत के समय मौन रहना ही सबसे अधिक बुद्धिमान का कार्य है। सही समय पर उचीत बुद्धि का प्रयोग करने से मुसीबत को टाला जा सकता है। कभी भी छोटे-छोटे बातों पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। हमेश सोच समझकर कार्य करना चाहिए नहीं तो कछुए जैसा हाल होता। मुसीबत के समय शांत मन से सही निर्णय लेने से कुछ हद तक मुसीबत दूर हो जाता है।

प्र-2 पाठ का सारांश अपने शब्दों में 80-100 शब्दों में लिखिए

उ- मगध देश में फुल्लोत्पल नामक तालाब में संकट और विकट नाम के दो हंस रहते थे। उनका एक मित्र कछुआ तथा बहुत सारी मछलियाँ भी वहाँ रहती थी। एक बार कुछ मछुआरों ने तालाब में मछलियों और कछुए को देखकर अगले दिन उन्हे पकड़ने की बात कही। संकट और विकट ने यह बात मछलियों तथा कछुए को बता दी। कछुआ घबरा गया, उसने हंसों से अपने बचाव के लिए कहा। कछुए को उड़ना नहीं आता था। हंसों ने एक योजना बनाई कि वे एक डंडी के सिरों को अपने चोंच में दबा लेंगे और कछुआ लकड़ी

को मुँह से बीच में पकड़ लेगा। हंसो ने उसे बोलने के लिए मना किया था। जब वे एक गाँव के ऊपर से उड़ रहे थे तो पतंग उड़ाते हुए बच्चों ने उन्हें देखा। वे उनके पीछे भागने लगे। कोई कहता कि अगर कछुआ गिरेगा तो वह उसे अपने घर ले जाएगा। कोई कुछ कहता। कछुए से रहा नहीं गया। जैसे ही गुस्से में वह बोलने लगा, वैसे ही नीचे गिरा और मर गया।

शिक्षा - हमेशा सोच-विचार कर के कार्य करना चाहिए नहीं तो कछुए जैसा हाल होगा।